15/9

Permission for Previous Test
Nehru Vihar
10-9-17

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL5**

निर्धारित समयः तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंकः 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): SONAL

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 07/09/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 2 1 4 0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Sne

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

अच्छा प्रयास

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 109

टिप्पणी (Remarks): सतत अध्ययन अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Permission for Previous Test

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) यूनीकोड और हिन्दी

यूनीकोड कंप्यूटर में संकेतों को एकीकृत करने की एक व्यवस्था का नाम है। कंप्यूटरीकरण के विकास के साथ विभिन्न भाषाओं को कंप्यूटर प्रणाली में उपयोग में लाने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि कंप्यूटर में विभिन्न भाषाओं के संकेतों को इंगित करने की क्षमता हो।

पूर्व में यह कार्य ASCII (ऐसकी) प्रणाली द्वारा किया जा रहा था। किंतु इसकी एक बड़ी सीमा यह थी कि इस प्रणाली में 8 बिट की एक बाइट होती थी, जिससे केवल 128 संकेतों को ही व्यक्त किया जा सकता था। यूनीकोड में 16 बिट की एक बाइट होती है। अत: 25536 संकेतों को दिखाए जाने की क्षमता के साथ यूनीकोड ने विभिन्न भाषाओं के कंप्यूटर द्वारा संप्रेषण को आसान कर दिया है।

जहाँ तक हिन्दी का सवाल है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यूनीकोड के आ जाने से हिन्दी टाईपिंग की एक प्रमुख समस्या 'फॉन्ट्स' की समस्या का निवारण हो गया है। यूनीकोड से पहले यह अनिवार्य था कि यदि हिन्दी भाषा में भेजे गए किसी संदेश को एक ऐसे कंप्यूटर में खोलना हो, जिसमें उस संदेश में प्रयुक्त 'फॉन्ट' नहीं है, तो वह संदेश नहीं खुल सकता था।

यूनीकोड ने इस समस्या का समाधान कर हिन्दी के तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महत्वपूर्ण 'सिस्टम साफ्टवेयर' विंडोज ने अपने 'वर्ड' टूल में यूनीकोड के प्रयोग से हिन्दी टाईपिंग की सुविधा को शामिल कर लिया है। इसके अतिरिक्त गूगल, फेसबुक इत्यादि पर भी यूनीकोड की सहायता से हिन्दी भाषा में विभिन्न 'साईट' एवं जानकारियाँ उपलब्ध हैं।

अच्छा।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

जयन्त विष्णु नार्लीकर का हिन्दी की के वैज्ञानिक लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है।

0/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण में विभिन्न विकास चरणों को देखा जा सकता है। जैसे –

क) टाईपराईटर : सर्वप्रथम देवनागरी ~~लिपी~~ लिपि से संबंधित यांत्रिक साधनों में टाईपराईटर का विकास हुआ। शुरुआत में रोमन प्रणाली में प्रयोग होने वाले टाईपराईटरों में कुछ बदलाव करके उसे देवनागरी लिपि के लिए प्रयोग करने का प्रयत्न किया गया। हालाँकि इसमें एक समस्या यह हुई कि रोमन लिपि एवं देवनागरी लिपि के मूल अंतरों ~~को~~ ~~[illegible]~~ पर ध्यान न देने से इस प्रणाली से देवनागरी लिपि की टाईपिंग त्रुटिपूर्ण रहती थी। इस प्रयास का सबसे अच्छा नमूना था 'रेमिंगटन टाईपराईटर'।

~~हालाँकि यह प्रयास सुदृढ़ नहीं~~

इस प्रणाली के प्रयोग के लिए अभ्यास आवश्यक होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ख) टेलीराईटिंग : टाईपराईटिंग के प्रयत्नों में कुछ बदलाव करके उसे टेलीराईटिंग का नाम दिया गया। यह प्रयास भी बहुत संतोषजनक नहीं था। भारतीय राजभाषा आयोग 1955 के सुझावों को ध्यान में रखकर इस दिशा में प्रयास किए गए।

ग) टेली फैक्स : इस तकनीक के आने से हिन्दी के दस्तावेजों की प्रति निकालना अत्यंत सरल हो गया। इसके साथ ही इन दस्तावेजों को इलेक्ट्रॉनिक तरंगों के माध्यम से किसी टेलीफोन के साथ लगे प्रिंटिंग यंत्र पर भी ~~निकाला~~ प्राप्त किया जा सकता है था।

उपरोक्त प्रयासों के कारण ही आगे चलकर हिन्दी के कंप्यूटरीकरण यंत्रों का विकास संभव हुआ।

गहराई लाएँ
मॉडल उत्तर देखें

1/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

मानक हिन्दी के व्याकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है पद संरचना। हिन्दी की पद संरचना के अंतर्गत दो वर्गीकरण किया जाता है -

1) विकारी पद
2) अविकारी पद

विकारी पद से तात्पर्य है वे पद जो किसी 'विकारोत्पादक तत्व' के कारण परिवर्तित हो सकते हैं। विकारी पद मूलतः 4 होते हैं -

क) क्रिया
ख) संज्ञा
ग) सर्वनाम
घ) विशेषण

इन 4 विकारी पदों में जिन तत्वों के कारण विकार उत्पन्न होता है, उन्हें विकारोत्पादक तत्व कहते हैं। इनकी संख्या भी 6 मानी गई है जिनमें प्रमुख हैं -

काल, वचन, पुरुष, वाच्य इत्यादि।

उदाहरण : राम जाता है।
सीता जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपरोक्त उदाहरण मे लिंग के अनुसार क्रिया मे परिवर्तन हुआ है (जाता है / जाती है)।

उदाहरण : तुम जा रहे हो।
तुम जाओगे।

उपरोक्त उदाहरण मे काल के अनुसार क्रिया मे विकार उत्पन्न हुआ है।

अविकारी पद वे होते है जो किसी भी स्थिति मे परिवर्तित नही होते। हिन्दी मे अविकारी पदो की संख्या 4 मानी गई है-

क) क्रिया - विशेषण
ख) समुच्चयबोधक शब्द
ग) संबंधबोधक शब्द
घ) विस्मयादिबोधक शब्द

उदाहरण : ① मै धीरे चल रही हूँ।
तुम धीरे चल रहे हो।
(क्रिया विशेषण)

उपरोक्त उदाहरण मे क्रिया - विशेषण मे 'पुरुष' के कारण कोई परिवर्तन नही आया है। अतः वह अविकारी पद है।

बहुत अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

मानक हिन्दी के व्याकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है 'वाक्य-संरचना'।

वाक्यों का वर्गीकरण वाक्य संरचना का सबसे प्रथम बिंदु है। संरचना की दृष्टि से वाक्यों को तीन वर्गों मे विभाजित किया जाता है –

क) सरल वाक्य : जहाँ संज्ञा, सर्वनाम, ~~वि~~ क्रिया पदों द्वारा एक ही अर्थ को दिखाया जाए, वह सरल वाक्य होगा।

उदाहरण : "राम ने रावण को मारा।"

ख) संयुक्त वाक्य : जहाँ कुछ समुच्चयबोधक शब्दों के प्रयोग से दो वाक्यों को मिला दिया जाए वह संयुक्त वाक्य होगा।

जैसे : "वह बाहर जा रहा था, किंतु बारिश के कारण नहीं गया।"

उपरोक्त वाक्य मे यदि विच्छेद किया जाए तो पता चलता है कि यहाँ दो क्रियाएँ दो अलग वाक्यों मे थी; जिन्हे 'किन्तु' शब्द के प्रयोग से मिला कर एक संयुक्त वाक्य बनाया गया।

निर्धारित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

वाक्यों में क्रिया के प्रयुक्त होने के स्थान के आधार पर भी वाक्यों का वर्गीकरण किया जाता है। जहाँ क्रिया वाक्य के आरंभ में आए उसे 'उद्देश्य' वाक्य कहेंगे, वह जहाँ 'क्रिया वाक्य के अंत में आए उसे 'क्रियान्तीय' क्रिया कहेंगे।

वाक्य संरचना की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण बिन्दु है कर्ता, कर्म, क्रिया की आपसी व्यवस्था। हिन्दी में सामान्यतः 'कर्ता - कर्म - क्रिया' की प्रणाली प्रयुक्त होती है। अंग्रेजी में इसके विपरीत 'कर्ता - क्रिया - कर्म' (subject - ~~object~~ - verb - object) का प्रयोग होता है।

हिन्दी की वाक्य संरचना में अन्य कारकों के प्रयोग का क्रम भी निश्चित है -

[सम्बोधन → कर्ता → अधिकरण → संबंध → आपादान → संप्रदान → करण → कर्म → क्रिया]

अतः हिन्दी की वाक्य संरचना सुनियोजित एवं वैज्ञानिक है।

अच्छा

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार कीजिये। 20

प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी के विकास से अर्थ है कि वर्तमान में आधुनिक प्रयोजनो को संप्रेषित करने में हिन्दी भाषा कितनी समर्थ है।

आधुनिक प्रयोजनो से अर्थ है कि आधुनिक जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षो – सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, वाणिज्यिक प्रयोजनो के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग कितना सक्षम है। हिन्दी भाषा को समर्थ बनाने की प्रक्रिया में पारिभाषिक शब्दावली के विकास की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय राजभाषा आयोग ने हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली को विकसित करने के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग तथा विधायी आयोग का गठन किया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने 'विधि' के क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों में हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली को विकसित किया है। यह प्रयत्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निरंतर रूप से चल रहा है।
'विधायी आयोग' जो कि विधि मंत्रालय के अंतर्गत आता है, 'कानून' के क्षेत्र से संबंधित ग्रंथों के अनुवाद के साथ ही हिन्दी की विधि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का विकास लगभग पूरा कर लिया है।

अत: आज हिन्दी विज्ञान, अर्थव्यवस्था, राजनीतिशास्त्र, वाणिज्य, हर क्षेत्र की गूढ़ एवं सूक्ष्म अवधारणाओं को संप्रेषित करने की क्षमता रखती है। समस्या यह है कि विभिन्न क्षेत्रों के विचारकों एवं विशेषज्ञों का हिन्दी में वैचारिक लेखन के प्रति रुझान कम है। इसका कारण हिन्दी भाषा की भाषिक क्षमताओं का कम होना नहीं बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली है। भारत में वर्तमान समय में मुख्य रूप से अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। प्रयास यह होना चाहिए कि हिन्दी भाषा में शिक्षा प्रदान की जाए। इससे विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ हिन्दी में अपने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विचारों को व्यक्त करेंगे। एवं हिन्दी की सार्वभौमिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

प्रश्न के अनुरूप उत्तर सुनिश्चित करने का प्रयास करें

मॉडल उत्तर देखें

5/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

मानक हिन्दी मे वचन संरचना एक महत्वपूर्ण पक्ष है। वचन एक विकारोत्पादक तत्व है तथा उसके आधार पर वाक्यो मे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया इत्यादि मे परिवर्तन होते है।

हिन्दी मे वचनो की संख्या दो मानी गई है-

क) एकवचन - जहाँ केवल एक ही व्यक्ति / वस्तु / स्थान की बात हो।

ख) बहुवचन - जहाँ एक से अधिक व्यक्तियो / वस्तुओं / स्थानो इत्यादि की बात हो।

ध्यातव्य है कि संस्कृत मे वचनो की संख्या तीन मानी जाती है। 'एकवचन' एवं 'बहुवचन' के अतिरिक्त संस्कृत मे 'द्विवचन' को भी वचन के रूप मे स्वीकार किया जाता है। हिन्दी द्वारा दो वचनो को स्वीकार करने से हिन्दी मे कारक व्यवस्था सरल हो जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हिन्दी की वचन व्यवस्था में 'पुरुष' के आधार पर निम्नांकित व्यवस्था मानी जाती है

उत्तम पुरुष	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम
अन्य पुरुष	वह	वे

इस व्यवस्था में कुछ समस्याएँ भी हैं। जैसे - पूर्वी हिन्दी में उत्तम पुरुष एकवचन में 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग होता है। अतः वहाँ उत्तम पुरुष बहुवचन के लिए 'हम लोग' का प्रयोग कर दिया जाता है। इसी प्रकार 'मध्यम पुरुष एकवचन' के लिए 'तू' शब्द का प्रयोग अपमानसूचक लग सकने के कारण प्रायः 'तुम' का प्रयोग होता है।

जैसे - तुम कहाँ जा रहे हो।
(एकवचन)

अतः यहाँ बहुवचन के लिए 'तुम लोग' का प्रयोग किया जाता है।

इसी प्रकार यदि मध्यम पुरुष एकवचन का प्रयोग किसी सम्मानित व्यक्ति के लिए किया जाए तो 'तू' के स्थान पर 'आप' का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग होता है।

वचन-व्यवस्था की एक मुख्य समस्या है कि द्रव्यसूचक शब्दों का बहुवचन नहीं बनाया जा सकता है।

जैसे - 'जल' के लिए एकवचन / बहुवचन का कोई अर्थ नहीं।

हिन्दी के दो वचनों की योजना अंग्रेज़ी में भी प्रयुक्त है (जहाँ - singular (एकवचन), plural (बहुवचन) की अवधारणा है) ।

अच्छा प्रयास और गहराई लाएँ मॉडल उत्तर देखें

7/7.5

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन में गुणाकर मुले का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। इसके लिए निम्नांकित कारणों को आधार माना जा सकता है।

क) उच्चारण की दृष्टि से हमारे मुख एवं उच्चारण प्रणाली के अंगों को श्वास की अवरुद्धता के आधार पर देखा जा सकता है-
कण्ठ, दन्त, तालू, मूर्धा, ओष्ठ इत्यादि।

देवनागरी लिपि में वर्णों का वर्गीकरण उच्चारण में आने वाली कठिनाई के आधार पर हुआ है।

सामान्यत: एक अंग से उच्चरित वर्णों को एक ही वर्ग में रखा गया है।
जैसे →

→ कण्ठ : अ, आ, क, ख, ग
→ दन्त : त, थ, द, ध
→ ओष्ठ : प, फ, ब, भ

यह व्यवस्था अन्य भाषाओं में सामान्यत: नहीं दिखाई पड़ती।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ख) देवनागरी लिपि में उच्चारण और वर्णों की लिखित रूप में एकरूपता है।

जैसे → दीर्घ ऊ के स्वर के लिए सदैव 'ऊ' का ही प्रयोग होगा।

रोमन लिपि में एकरूपता की समस्या उत्पन्न होती है। जैसे - PUT → में 'U' का प्रयोग 'उ' के लिए होगा।

वहीं - foot → में 'oo' का प्रयोग भी 'उ' के लिए होगा।

हिन्दी में लिखने पर 'पुट', 'फुट' दोनों में उच्चारण की समरूपता लिखित रूप में भी रहती है। इस तरह हिन्दी की लिपि रोमन लिपि की तुलना में बेहतर रूप में वैज्ञानिकता धारण करती है।

ग) देवनागरी लिपि में एक उच्चारण के लिए केवल एक ही ध्वनि प्रयुक्त होती है।

घ) देवनागरी लिपि में संयुक्त वर्णों की सुविधा है जो कि अन्य लिपियों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे रोमन मे नज़र नही आती।

जैसे - क्ष, प्र इत्यादि

5.) ~~हिन्दी की प्रत्येक~~ देवनागरी लिपि मे प्रत्येक वर्ण शिरोरेखा युक्त होता है। यह इसकी एक अनोखी विशेषता है, जो वाक्य संरचना मे स्पष्टता ~~एवं~~ बनाती है।

अच्छा प्रयास और बेहतर बनाएँ

10½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी में लिंगों की संख्या दो मानी गई है-
क) पुल्लिंग
ख) स्त्रीलिंग

संस्कृत में लिंगों की संख्या तीन मानी जाती है। पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग के अलावा नपुंसकलिंग को भी तीसरा लिंग माना जाता है। किंतु सरलीकरण की प्रक्रिया में हिन्दी भाषा ने केवल दो लिंगों की व्यवस्था ही स्वीकार की। इसके कारण जो समस्याएँ उत्पन्न हुई वे निम्नलिखित हैं-

क) हिन्दी की विकास यात्रा में संस्कृत से सरलीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। संस्कृत में ~~सभी~~ तीन लिंगों की व्यवस्था यद्यपि हिन्दी ने स्वीकार नहीं की किन्तु संस्कृत के शब्दों को स्वीकार किया। इसके कारण नपुंसकलिंग शब्दों को पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग में शामिल किया गया। इसके लिए यह युक्ति प्रयोग की गई कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अकारान्त शब्दों को प्रायः पुल्लिंग एवं आकारान्त शब्दों को स्त्रीलिंग में शामिल किया गया।

किंतु फिर भी कुछ शब्दों में लिंग समस्या बनी रही।

जैसे : बस जाती है। (स्त्रीलिंग)

ट्रक आ रहा है। (पुल्लिंग)

एक से प्रयोजन के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्दों में एकरूपता की कमी नजर आती है।

ख) लिंग-व्यवस्था की दूसरी बड़ी समस्या है कुछ ऐसे शब्दों को लेकर जो ~~रोमन लिपि~~ अंग्रेज़ी की भाँति "उभयलिंगी" के शब्द प्रतीत होते हैं। जैसे - 'राष्ट्रपति'।

'राष्ट्रपति' पदसूचक शब्द है जो महिला / पुरुष कोई भी धारण कर सकता है। किन्तु यदि महिला के संदर्भ में 'राष्ट्रपत्नी' कहा जाए तो यह हास्यास्पद लग सकता है। अतः ऐसे कुछ शब्दों को उभयलिंग मानने की बाध्यता हो जाती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ग) तीसरी समस्या यह है कि पूर्वी हिन्दी मे आंचलिक प्रवृत्तियो के कारण कुछ शब्दो को पुल्लिंग मान लिया जाता है, जबकि मानक हिंदी मे ये शब्द स्त्रीलिंग है।

जैसे → बस जा रहा है। (पूर्वी हिन्दी)

बस जा रही है। (मानक हिन्दी)

व्याकरण संबंधी

अच्छा प्रयास

और बेहतर करें

मॉडल उत्तर देखें

7½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की शब्द संपदा समृद्ध है। इसका विश्लेषण करने के लिए शब्दों को विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है।

निर्माण की दृष्टि से शब्दों के तीन प्रकार माने गए हैं:-

क) रूढ़ : जो शब्द सरल हों, विखंडित न किए जा सकें, तथा एक ही अर्थ के लिए रूढ़ हो, उन्हें ही रूढ़ कहा जाएगा।

जैसे → विद्या, धर्म

ख) यौगिक : जो शब्द दो या अधिक शब्दों के मेल से बने तथा जिनका अर्थ भी दोनों शब्दों के पृथक अर्थों को मिलाकर बने वे शब्द यौगिक कहलाते हैं।

जैसे : विद्यालय
↓
विद्या + आलय = जहाँ शिक्षा दी जाए

ग) योगरूढ़ : जो शब्द दो शब्दों को मिलाकर बने हों, किंतु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उनका प्रयोग एक विशेष अर्थ में ही किया जाए, वे योगरूढ़ कहलाते हैं।

जैसे : पंकज → कीचड़ में उत्पन्न होने वाला।

'पंकज' का शाब्दिक अर्थ है कीचड़ में उत्पन्न, किंतु लोकप्रचलन में इसका प्रयोग 'कमल' के लिए ही किया जाता है।

स्रोत की दृष्टि से हिन्दी में शब्दों को 4 भागों में बाँटा जाता है।

क) तत्सम : तत्सम अर्थात 'उसके समान'। यहाँ 'उसके' का अर्थ है संस्कृत के। अर्थात जो शब्द हिन्दी में संस्कृत भाषा से लिए गए हैं, वे तत्सम कहलाएँगे।

जैसे - क्षमा, वृक्ष इत्यादि

ख) तद्भव : जो शब्द संस्कृत के शब्दों के सरलीकरण से बने हैं वे तद्भव कहलाते हैं।

जैसे - धूम्र → धुआँ

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ग) देशज : जो शब्द आंचलिक प्रवृत्तियों के कारण हिन्दी शब्द संपदा का हिस्सा बन गए हैं, वे देशज शब्द हैं।

जैसे - बैलगाड़ी

घ) विदेशज - जिन विदेशी भाषा के शब्दों को हिन्दी में स्वीकार किया गया, वे विदेशज कहलाते हैं। ध्यातव्य है कि इन शब्दों को हिन्दी की ध्वन्यात्मक विशेषताओं के आधार पर कुछ परिवर्तित करके स्वीकार किया गया है।

जैसे - एकेडमी → अकादमी
ट्रैजेडी → त्रासदी

बहुत अच्छा

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रपद्यवाद

'प्रपद्यवाद' अथवा 'नकेनवाद' प्रयोगवादी 'काव्यधारा' के समानांतर एक काव्यधारा थी। इसके तीन प्रमुख रचनाकारों के नाम के आधार पर इसे 'नकेनवाद' कहा गया।

कवियों के नामोल्लेख करें

प्रपद्यवाद के प्रस्तावक रचनाकारों के अनुसार प्रयोगवाद की असल शुरुआत उनके काव्य ग्रंथ- 'नकेन के प्रपद्य' से हुई थी, जिसमें उन्होंने अपनी काव्य संबंधी दृष्टि प्रतिपादित की है।

प्रपद्यवाद के समर्थक कवियों ने पूर्व की सभी काव्यधाराओं को खारिज कर अपने नए प्रतिमान स्थापित किए। उनके काव्य में अनावश्यक रूप से यौन-प्रसंगों का भरपूर चित्रण किया गया है। प्रयोगवाद से तुलना करें तो हम पाते हैं कि काम-चेतना की जिस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधारणा को प्रयोगवाद मे मनुष्य की एक सहज प्रवृत्ति के रूप में दिखाया गया, उसे प्रपंचवाद मे अनावश्यक रूप से बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है।

साहित्य समीक्षकों की दृष्टि मे प्रपंचवाद को बहुत प्रतिष्ठित काव्यधारा नही माना जाता।

अच्छा

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तारसप्तक

'तारसप्तक' 1943 में प्रकाशित एक ~~संग्रह~~ संकलन था, जिसमें 7 प्रमुख कवियों की कृतियाँ प्रकाशित हुई थीं। इनमें प्रमुख थे → अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध इत्यादि।

हिन्दी साहित्य में इसे एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है क्योंकि इसके साथ ही हिन्दी साहित्य में एक नई ~~स~~ काव्यधारा की शुरुआत हुई। जिसे हम प्रयोगवाद कहते हैं। कुछ समीक्षकों की राय में यह धारा प्रगतिवाद के विरोध में शुरू हुई थी। किंतु यदि हम 'तारसप्तक' में शामिल 7 कवियों को देखें तो स्पष्ट होता है कि इनमें से ~~a~~ 4 कवि तो ऐसे थे, जिन्हें प्रगतिवाद में भी शामिल किया जाता है।

तारसप्तक की महत्ता यह है कि इसके संपादक अज्ञेय ने इसकी भूमिका में 'प्रयोगशील' होने का अर्थ बताते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुए इस नई काव्यधारा का वैचारिक पक्ष स्पष्ट किया। अज्ञेय ने तारसप्तक की भूमिका में स्पष्ट किया है कि जीवन के सत्यों की खोज करने के लिए प्रयोग आवश्यक है। अतः उन्होंने प्रयोग को साध्य नहीं, साधन बताया है। इसी प्रकार 'दूसरे तारसप्तक' में वे 'प्रगतिवाद' नामकरण के विरुद्ध कहते हैं कि प्रगतिवाद नाम इस काव्यधारा के लिए उचित नहीं है। उनके अनुसार -

"कविता का कोई वाद नहीं होता"।

(दूसरा तारसप्तक)

प्रयोगवाद

अच्छा प्रयास

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

पंत ने आलोचनात्मक साहित्य के में योगदान स्वरूप 'पल्लव' की रचना की। हिन्दी साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

इस रचना के द्वारा सुमित्रानंदन पंत्र ने आचार्य शुक्ल के 'छायावाद' संबंधी मत को खारिज करने का प्रयास किया। हिन्दी साहित्य में 'पल्लव' की भूमिका को वही दर्जा प्राप्त है जो पश्चिम में "Preface to lyrical Ballads" को।

इस रचना के माध्यम से पंत ने छायावाद को स्वच्छंदतावाद का अगला चरण दिखाते हुए दोनों की समानताओं पर प्रकाश डाला।

पंत ने दिखाया कि किस प्रकार छायावाद और स्वच्छंदतावाद में वैयक्तिकता, प्रकृति-चित्रण, स्वातंत्र्य चेतना इत्यादि समान विशेषताएँ हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल के छायावाद संबंधी मतों का खण्डन करने के लिए पल्लव की भूमिका का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

अच्छा प्रयास

5/10

रहस्यानुभूति
व्यक्तिगत स्वतंत्रता
एवं रूढ़िवादी समाज
के मध्य टकराहट
की उपज

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रतिनिधि कवियित्री हैं।

उनके काव्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है– 'रहस्यवाद'। ध्यातव्य है कि छायावाद में रहस्यवाद एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में देखा गया है। किन्तु यह रहस्यवाद मध्यकालीन रहस्यवाद से इतर सामाजिक कारणों से उत्पन्न होता है न कि आध्यात्मिक कारणों से।

महादेवी की बात करें तो, वे स्वयं ही स्वीकार करती हैं कि उनके रहस्यवादी काव्य के कारण बौद्धवाद एवं उनके अपने जीवन की परिस्थितियाँ रही हैं। महादेवी के काव्य में रहस्यवाद का वर्णन कुछ समीक्षकों ने उनके जीवन में दाम्पत्य सुख के अभाव के रूप में देखा है।

इस संदर्भ में कुछ पंक्तियाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्रष्टव्य है:-

" प्रिय मुझी मे खो गया,
अब दूत को किस देश भेजूँ।"

~~इस~~ महादेवी के रहस्यवाद मे आध्यात्मिकता का पुट भी नजर आता है।

" ~~जब~~ जब असीमित से हो जाएगा मेरी
लघु सीमा का मेल,
देखोगे तब देव अमरता खेलेगी मिटने
का खेल।"

अ-धा

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिन्दी के संस्मरण साहित्य-परंपरा का अति संक्षिप्त परिचय देते हुए समकालीन संस्मरण साहित्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'संस्मरण' हिन्दी साहित्य की एक आधुनिक विधा है, जिसके अंतर्गत किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना इत्यादि का वर्णन 'स्मृतियों' के आधार पर किया जाता है।

इस विधा की शुरुआत द्विवेदी युग से हुई थी। संस्मरणों की परम्परा में विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रमुख कृतियों के अनुवाद भी किए गए हैं। 'यात्रा-संबंधी' संस्मरण आज की सबसे लोकप्रिय विधा है।

महादेवी वर्मा 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' लिखने के लिए जानी जाती हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- ~~अतीत~~ 'स्मृति की रेखाएँ', 'मेरा परिवार' इत्यादि।

महादेवी ने इन रचनाओं में अपने जीवन ~~व~~ में विभिन्न घटनाओं में शामिल व्यक्तियों व पशुओं के विषय में लिखा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समकालीन साहित्य मे संस्मरण एक लोकप्रिय विधा के रूप मे प्रचलित है।

गहराई अपेक्षित
मॉडल उत्तर देखें

4/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कविता की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रगतिवाद	प्रयोगवाद
1) 1936 – 1943 तक सक्रिय रही यह काव्यधारा	1) 1943 से 1960 तक सक्रिय रही।
2) प्रगतिवाद के अनुसार कविता अथवा साहित्य का प्रयोजन है शोषित वर्गों में वंचन के प्रति तनाव पैदा करना।	2) प्रयोगवाद कविता/साहित्य को साध्य मानता है, साधन नहीं। प्रयोगवाद के अनुसार कविता का उद्देश्य केवल इतना है कि वह रचनाकार के भावों की संपूर्ण अभिव्यक्ति कर सके।
3) प्रगतिवाद मानता है कि रचनाकार की रचनात्मक क्षमता उसकी भौतिक परिस्थितियों से उत्पन्न होती है। अतः वह वंशानुगत व जन्मप्राप्त नहीं हो सकती।	3) प्रयोगवादी समर्थक मानते हैं कि कवि की रचनात्मक क्षमता उसके अस्तित्व का अभिन्न अंग है, भौतिक परिस्थितियों की देन नहीं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

4) प्रगतिवादी कविता का वैचारिक आधार मार्क्सवाद है।	4) प्रयोगवादी कविता फ्रॉयड के 'मनोविश्लेषणवाद', इलियट के 'निर्वैयक्तिकता सिद्धांत' इत्यादि के वैचारिक प्रभावों से निर्मित है।
5) प्रगतिवादी कविता में शिल्प को कविता की अंतर्वस्तु का उप-उत्पाद माना जाता है। अत: ये कवि शिल्प को ~~महत्व~~ महत्व नहीं देते।	5) प्रयोगवादी कवि शिल्प को अंतर्वस्तु ~~का~~ का उप-उत्पाद न मानते हुए उसे रचनात्मकता का आधार मानते हैं। विभिन्न प्रयोगों जैसे (फैंटेसी) शिल्प, इत्यादि को महत्व देने वाले इन कवियों ने शिल्प को अंतर्वस्तु के समान महत्व दिया है।
6) प्रगतिवाद के प्रमुख रचनाकारों में शामिल हैं - नागार्जुन, मुक्तिबोध इत्यादि।	6) प्रयोगवाद के प्रमुख रचनाकार हैं - अज्ञेय।

अच्छा।

8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की 'नई समीक्षा' आलोचना-दृष्टि के प्रमुख आलोचकीय प्रतिमानों का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नई समीक्षा के सैद्धांतिक प्रतिमान —

क) रचनाकार के भोगे हुए यथार्थ को उद्घाटित करने की क्षमता।

ख) पारंपरिक कथानक ढाँचे से इतर कथानक में बिखराव जो कि जीवन के यथार्थ को चित्रित करता हो।

ग) कथा का उद्देश्य केवल यथार्थ की अभिव्यक्ति करना होना चाहिए, न कि नैतिक मूल्यों अथवा आदर्शों की स्थापना करना।

घ) कथानक में चरित्रों को लेखकीय हस्तक्षेप से यथासंभव मुक्ति।

ङ) काम-चेतना के दमन स्वरूप कुंठा की अभिव्यक्ति।

च) शिल्प अत्यंत महत्वपूर्ण है - इस कारण विभिन्न भाषिक प्रयोग, कथानक शैलियों का प्रयोग होना चाहिए।

अच्छा

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation